Vijay Kumar Jha.
Asso. Prof
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar.
Saturday

Degree Part I

Golden age of Gupta Period.

गुप्त काल लगभग 320 ई० से 550 ई० तक माना जाता है। इस काल में गुप्त सम्राटों की सत्ता समस्त भारत में फैली रही। गुप्त साम्राज्य में राजनीतिक एकता कायम रही अतः शांति एवं समृद्ध अर्थव्यवस्था कायम रही। सर्वत्र साहिष्णुता का वातावरण कायम रहा इसलिए सामाजिक जीवन में उदारता थी। फिर भी कई क्षेत्रों में रूढ़िवाद कायम थी। कला एवं साहित्य के क्षेत्र में यह काल निःसन्देह स्वर्ण युग माना जा सकता है। इस काल में सर्व प्रथम वैष्णव और शैव मंदिरों का निर्माण हुआ जो कालान्तर में भारतीय संस्कृति का केन्द्र बना।

गुप्तकाल संस्कृत साहित्य का स्वर्ण काल था। संस्कृत साहित्य का उत्थान जो मौर्योत्तर काल में प्रारम्भ हुआ इस काल में चरम पर पहुँच गया। इस काल में पाली और प्राकृत के स्थान पर संस्कृत भाषा को माध्यम बनाया गया। अब बौद्ध एवं जैन साहित्य की रचना संस्कृत भाषा में हुआ। इस काल में वायु, विष्णु, मार्कण्डेय तथा भागवत पुराणों को अंतिम रूप दिया गया तथा रामायण तथा महाभारत के अंतिम अध्याय की रचना हुई। नारद स्मृति, कात्यायन स्मृति और बृहस्पति स्मृति की रचना गुप्त युग में ही हुआ।

संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कालीदास की रचनाएँ Sunday ऋतु संहार मेघदूत, रघुवंश, कुमार संभव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीयम, अभिज्ञान शाकुंतलम् आदि ग्रंथों की रचना हुई। महाकवि शूद्रक के रचना मृच्छकटिकम् मुख्य है। महाकवि भास - मध्यम व्यायोग, दूतवाक्य, बालचरित प्रतिज्ञा यौगन्धरायण, चारुदत्त, पंचरात्र आदि मुख्य है। महाकवि भारवि के किरातार्जुनीयम् संस्कृत साहित्य का नगीना है। प्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, देवी चन्द्रगुप्तम मुख्य ग्रंथ है। संस्कृत भाषा के प्रथम प्रशस्ति रुद्रदामन का

Scanned with Cam

जूनागढ़ अभिलेख, समुद्र गुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, मन्दसौर सूर्य मन्दिर प्रशस्ति का रचनाकार वत्सभट्ट प्रमुख है। सुबन्धु इस काल का श्रेष्ठ गद्यकार थे जिसकी रचना प्रत्यक्षरश्लेष कहा गया है। दूसरा गद्य रचयिता है। दण्डी कि दशकुमार चरित्र श्रेष्ठ गद्य है। अमर सिंह का अमरकोष जिसे विश्वकोष कहा गया है। ईश्वर कृष्ण सांख्यकारिका कि रचना की। व्यास ने व्यास भाष्य लिखा। बौद्ध दार्शनिक ने कई दर्शन लिखे – योगाचार भूमिशास्त्र, प्रकरण आर्यवाचा, महायान सम्परिग्रह आदि। दिङ्गनाग का प्रमाण समुच्चय तथा बुद्ध घोष का विशिष्ट उल्लेखनीय रचना है।

विज्ञान के क्षेत्र में गुप्तकाल में अभूतपूर्व प्रगति हुआ। आर्यभट्ट इस काल के महान वैज्ञानिक थे जिसने आर्यभट्टीयम तथा तन्त्रशास्त्र नामक ग्रंथ लिखा, बीज गणित के समीकरण, पाई का मूल 3.1416 बताया गया जो शुद्धता के अत्यन्त निकट है। महाभास्कराचार्य, वराहमिहिर जिन्होंने पंचसिद्धान्तिका, वृहत संहिता, लघुजातक तथा वृहतजातक ग्रंथ लिखे। खगोल शास्त्री ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण के नियम को स्पष्ट किया। इस काल में आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांग संग्रह कि रचना हुई तथा पशु चिकित्सा के क्षेत्र में हस्त्युर्वेद जिसके रचनाकार पालकाप्य नामक ऋषि थे। रसायन तथा धात्विक शास्त्री नागार्जुन इसी काल में हुये थे और खनिज शास्त्री भी थे ऐसा कि लौहस्तम्भ के निर्माण से ज्ञात होता है

कला के क्षेत्र में गुप्तकाल वैभव और समृद्ध का युग था। कला के सभी क्षेत्र जैसे स्थापत्य, मूर्ति, चित्रकला, पर पकड़ था। स्थापत्य के क्षेत्र में मन्दिरों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। मूर्ति कला तथा चित्र कला में महारत हासिल किया गया। गुप्त कला कि मुख्य विशेषता अलंकार, संयम आकार, सरलता, श्रृंगार, स्वाभाविकता आदि हैं। गुप्तकालीन स्थापत्य के पांच प्रकार उपलब्ध हैं – गुहायें, मन्दिर विहार और स्तम्भ। इस काल के स्थापत्य कला में ईंटों के स्थान पर पत्थरों का प्रयोग होता था। उज्जैनी के अट्टालिकाओं से पता चलता है कि भवन निर्माण कला उच्चकोटि का होता था

गुहावास्तु कला का आरम्भ मौर्य काल में हुआ कि

Scanned with Cam

विकास गुप्त काल में ब्राह्मण कालीन गुहाएं, विक्रमादित्य कालीन गुहाएं, उदयगिरी कि गुहाएं जिसमें बाहरी दिवाल पर मुर्ति उत्कीर्ण था। ये गुहा छोटे और बड़े दोनों थे। अजन्ता की गुहाओं कि संख्या 29 था जो सभी बौद्ध गुहायें थी इनका स्थापत्य उच्चकोटि का था। भित्तियों पर बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्र उत्कीर्ण थे। गुहा 20 स्तम्भों से अलंकृत थे। एलोरा में बुद्ध, जैन एवं ब्राह्मण गुहाएं हैं। कुछ गुहाएं वर्गाकार हैं और कुछ आयताकार। औरंगाबाद में 12 गुहाएं प्राप्त हुये हैं। बिहार में मन्दारागिरि तथा दक्षिण भारत में मुगलराजपुरम गुहाएं प्राप्त हुये हैं।

गुप्तकाल में कई स्तूप तथा विहार का निर्माण हुआ। स्तूप कि ऊँचाई 128 फीट है ऊपर में बुद्ध के कई मुर्तियां है। राजगृह का स्तूप जरासंध की बैठक के नाम से प्रसिद्ध है। गुप्तकालीन स्तूप सारनाथ एवं नालन्दा से भी प्राप्त हुये हैं जिसका निर्माण ह्वेनसांग ने किया था। गुप्तकाल में कई स्तम्भ भी प्राप्त हुये हैं ये स्तम्भ धार्मिक स्मारक के रूप में था स्तूप पर राजचिन्ह वैष्णव धर्म से सम्बन्धित था क्योंकि गुप्त राजा वैष्णव धर्मावलम्बी थे। दिल्ली के मेहरौली लौह स्तम्भ को गरुड़ध्वज कहा गया है। स्कन्दगुप्त ने विष्णु के मन्दिर में कई स्तम्भों का निर्माण करवाया था। स्तम्भ के मुख्य भाग, गलकुम्भ, फलक और चौकी होता था शीर्ष भाग पर मुर्ति का निर्माण किया जाता था

गुप्तकाल में मन्दिरों के निर्माण का उल्लेख मिलता है मन्दिर के निर्माण वैष्णव धर्म को ध्यान में रखकर किया गया था। मन्दिरों का निर्माण ईंटों और पत्थरों से होता था। तिगवा का विष्णु मन्दिर, भूमरा का शिव मन्दिर, नचना कुठार का पार्वती मन्दिर, देवगढ़ का दशावतार मन्दिर गुप्त काल के अद्भुत नमूना हैं। प्रस्तर के मन्दिर का आकार छोटा होता था तथा गर्भगृह मन्दिर के मध्य में होता था मन्दिर कि ऊँचाई लगभग 40 फीट होते थे जो चबूतरे पर बने होते थे स्तम्भ तथा प्रवेश द्वार अलंकृत होते थे मन्दिर के फर्श तराशे गये पत्थर से निर्मित था। छत पर कमल पुष्प का अंकन होता था प्रवेश द्वार पर गंगा-यमुना का मुर्ति लगा होता था।

गुप्तकाल कि मुर्तियां कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर होते थे। भगवान बुद्ध कि कई भाव भंगिमा कि मुर्ति होते थे। कुषाण काली

APRIL 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30

Scanned with Cam

मुर्ति पर हल्के वस्त्रों का प्रयोग होता था जिससे अंग प्रत्यंग कि सुन्दरता झलकती थी। सारनाथ का बुद्ध मुर्ति मुर्तिकला की अनूठी निशानी है। सुल्तान गंज (भागलपुर) के खड़ी कांस्य कि बुद्ध मुर्ति जिसकी ऊँचाई साढ़े सात फीट है। देवगढ़ के दशावतार मन्दिर में राम और कृष्ण कि प्यारी मुर्तियों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है गंगा यमुना के जन्म प्रयाग में संगम के मुर्ति आदि अद्वितीय है कृष्ण का गोकुल प्रस्थान, शकट वध, कृष्ण सुदामा भेंट, राम-वन गमन, अहिल्या उद्धार, नर नारायण कि मुर्ति अद्भुत और कलात्मक है।

गुप्तकालीन चित्रकला भी भित्ती चित्र, गुफा के दिवार एवं मन्दिर के दिवार पर उत्कीर्ण चित्र अत्यन्त भावुक एवं सजीव प्रतीत होता है चट्टानों के द्वारा निर्मित चित्र अत्यन्त मार्मिक है अधिकतर चित्रकार बौद्ध भिक्षु थे गोबर, मिट्टी और भुसा के मिश्रण से लाल, पीला और सफेद रंग बनाकर दिवालों पर सुन्दर चित्रकारी करते थे जिसमें, देवी देवता, पशुपक्षि नदी नाला, उड़ते पक्षी आदि चित्र करता था।

अतः गुप्त कालीन साहित्य एवं कला के अध्ययन से पता चलता है कि गुप्त राजा सिर्फ गुप्त साम्राज्य ही कायम नहीं किया बल्कि साम्राज्य को संस्कृति और कला से सजाया सवारा कोई भी कला गुप्त राजा से छूट नहीं पाया यहाँ तक कि गुप्त राजा संगीत से भी रुचि रखते थे मयूर वाद्य यंत्र बजाने में महारत हासिल किये थे। चूंकि गुप्त में साम्राज्य के अन्दर शांति मय वातावरण व्याप्त था अतः ऐसे वातावरण में ही साहित्य और कला के विकास संभव होता है प्राचीन भारत में गुप्त काल में ही व्यापक पैमाने पर कला और संस्कृति का विकास हुआ अतः गुप्त काल को स्वर्ण कि संज्ञा देना कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

Scanned with Can